

देश-देशांतर/द बगि पकिचर: बैंकगि घोटाले: ससिस्टम की कमजोरियाँ और वकिलप

संदर्भ एवं पृष्ठभूमि

- नीरव मोदी और मेहुल चोकसी के फायरस्टर इंटरनेशनल पब्लिक लि. तथा गीतांजलि जेम्स जैसे प्रतिष्ठित समूहों पर मुंबई में पंजाब नेशनल बैंक की बुरैडी हाउस शाखा में लगभग 11,500 करोड़ रुपए का घोटाला करने का आरोप लगा है।
- इसके बाद कानपुर के रोटोमैक ग्रुप ऑफ कंपनीज के वकिरम कोठारी द्वारा बैंकों के कंसोर्टियम से लिये गए ऋण और ब्याज के 3695 करोड़ रुपए का एक और घोटाला सामने आया। इस कंसोर्टियम में शामिल बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने अपने 616.19 करोड़ रुपए की वसूली के लिये ग्रुप को डिफाल्टर घोषित कर दिया।
- इससे पहले कगिफिशर एयरलाइंस के प्रवर्तक वजिय माल्या भी एसबीआई के नेतृत्व वाले बैंकों के समूह से लिये गए 6000 करोड़ रुपए से अधिक का ऋण न चुका पाने के कारण लंदन में जा बैठे हैं।

क्या होता है एलओयू?

- इस मामले में पीएनबी के अधिकारियों ने धोखाधड़ी कर अरबपति हीरा कारोबारी नीरव मोदी से जुड़ी फर्मों को साख पत्र (Letter of Undertaking-LoU=लेटर ऑफ अंडरटेकिंग-एलओयू) दिया। इससे उसने वदेशों में नज्दी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के विभिन्न बैंकों से पैसा लिया।
- एलओयू एक तरह की गारंटी होती है, जिसके आधार पर अन्य बैंक खातेदार को पैसा उपलब्ध करा देते हैं।
- एलओयू किसी अंतरराष्ट्रीय बैंक या किसी भारतीय बैंक की अंतरराष्ट्रीय शाखा की ओर से जारी किया जाता है।
- इसके आधार पर बैंक, कंपनियों को 90 से 180 दिनों तक के शॉर्ट टर्म लोन उपलब्ध कराते हैं।
- इसी के आधार पर कोई भी कंपनी दुनिया के किसी भी हिस्से में राशि को निकाल सकती है।
- इसका इस्तेमाल ज्यादातर आयात करने वाली कंपनियों वदेशों में भुगतान के लिये करती हैं।
- एलओयू किसी भी कंपनी को लेटर ऑफ कमफर्ट के आधार पर दिया जाता है, जो कंपनी के स्थानीय बैंक की ओर से जारी किया जाता है।
- यदि खातेदार को डिफॉल्टर घोषित कर दिया जाता है तो एलओयू उपलब्ध कराने वाले बैंक की यह ज़िम्मेदारी होती है कि वह संबंधित बैंक को बकाए का भुगतान करे।
- पीएनबी की उपरोक्त मुंबई शाखा के कुछ उच्चधिकारियों ने **स्वफिट कोड मैसेजिंग ससिस्टम** का दुरुपयोग किया।
- बैंक इसी ससिस्टम से वदेशी लेन-देन के लिये एलओयू के ज़रिये दी गई गारंटी को अधिप्रमाणित (Authenticate) करते हैं।

(टीम दृष्टि इनपुट)

कैसे हुआ फ्रॉड?

- पीएनबी के अलावा इन बैंकों में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, इलाहाबाद बैंक और एक्ससि बैंक शामिल हैं। इन बैंकों ने पीएनबी द्वारा जारी किये गए एलओयू के आधार पर क्रेडिट की पेशकश की थी।
- नीरव मोदी से जुड़ी तीन फर्मों--डायमंड्स आर अस, सोलर एक्सपोर्ट्स, स्टेलर डायमंड्स ने बैंक से संपर्क कर बायर्स क्रेडिट की मांग की, ताकि वे अपने वदेश के कारोबारियों को भुगतान कर सकें।
- इन फर्मों को बैंक की मालीभगत से बायर्स क्रेडिट सुविधा प्रदान की गई, जबकि उनका कोई पुराना बेहतर क्रेडिट रिकॉर्ड नहीं था। इसके बाद हांगकांग की बैंक शाखाओं में धन का स्थानांतरण किया गया।
- इन एलओयू के आधार पर कुछ भारतीय बैंकों की वदेशी शाखाओं ने नीरव मोदी को फॉरेक्स क्रेडिट दिया था, लेकिन इन एलओयू की एंट्री पीएनबी के कोर बैंकगि ससिस्टम में नहीं की गई थी।
- ये एलओयू पीएनबी ने मॉरीशस, बहरीन, हांगकांग, एंटरप और फ्रैंकफर्ट में भारतीय बैंकों को जारी किये थे।
- इनके आधार पर उपरोक्त बैंकों की वदेश स्थिति शाखाओं से हजारों करोड़ रुपए के ऋण उठा लिये गए।

नोस्ट्रो एकाउंट

- यह रकम एक वदेशी बैंक के साथ पंजाब नेशनल बैंक के खाते में दी गई थी जिसे **नोस्ट्रो एकाउंट** कहते हैं।
- नोस्ट्रो एकाउंट सामान्य तौर पर किसी घरेलू बैंक द्वारा वदेशी बैंक में खोले गए खातों को कहते हैं।
- इन खातों का इस्तेमाल वदेशी पार्टियों को आयात के बदले भुगतान करने में किया जाता है।

पूर्व में भी नोस्ट्रो खातों और उनके दुरुपयोग को देखते हुए रज़िर्व बैंक ने बैंकों को इन खातों पर कड़ी नगिरानी रखने और इनका नपिटारा करने की सलाह दी थी। लेकिन वह यह सुनिश्चिती नहीं करा पाया कि बैंक उसकी सलाह मानकर इस संबंध में मजबूत प्रणाली विकसित करें।

स्वफिट (SWIFT) कोड कैसे जगि ससि्टम

- स्वफिट (Society for Worldwide Interbank Financial Telecommunication-SWIFT) अर्थात सोसाइटी फॉर वर्ल्डवाइड इंटरबैंक फाइनेंशियल टेलीकम्युनिकेशन एक इंटर-बैंकिंग मैसेजिग ससि्टम है, जसिं वदिशी बैंक पैसा जारी करने से पहले लोन का ब्योरा पता लगाने के लयि इस्तेमाल करते हैं।
- स्वफिट के ज़रयि एलओयू एक बैंक से दूसरे बैंक भेजे जाते हैं। पीएनबी घोटाले में स्वफिट का बनिा नगिरानी हुआ इस्तेमाल अनुपालन संबंधी नरिदेशों की अनदेखी कर कयिा गया, जसिने 11,000 करोड़ रुपए के इस घोटाले में मदद की।
- स्वफिट सुवधि का उपयोग बैंक अपने बजिनेस की ज़रूरतों के लयि करते हैं तथा स्वफिट मैसेजिग ससि्टम का इस्तेमाल वदिश में लेन-देन के लयि कयिा जाता है।
- स्वफिट एक मैसेजिग नेटवर्क है जो वतितीय संस्थानों को कोड की एक मानकीकृत प्रणाली के माध्यम से जानकारी देने और नरिदेशों को सुरकषति रूप से संचारति करने के लयि उपयोग में लाया जाता है।
- इससे पूरी दुनयिा में सुरकषति फाइनेंशियल मैसेजिग की जाती है, जो एन्क्रप्टिटेड होती है और इसकी सुरकषा काफी मज़बूत होती है।

त्रसि्तरिय जाँच प्रकरयिा

स्वफिट प्रकरयिा की जाँच तीन स्तरों पर की जाती है। स्वफिट इंस्ट्रक्शन का मतलब होता है कि बैंक की सहमति से यह कार्य कयिा जा रहा है यानी बैंक इसे बनाता है, फरि इसकी जाँच होती है। इसके बाद एक बार और सारी जानकारयिों की पुष्टि करके ही अगले बैंक तक इसे भेजा जाता है। तीन स्तरों पर की गई इस जाँच प्रकरयिा के कारण इसे बेहद सुरकषति माना जाता है।

(टीम दृष्टि इनपुट)

कैसे पता चला फ्रॉड का?

- पीएनबी के अधिकारयिों ने सबसे पहले नीरव मोदी को 800 करोड़ की रकम का एलओयू जारी कयिा था। जब वह उसको नहीं चुका पाया तो बैंक ने पैसा वसूलने के बजाय और एलओयू जारी कर दयि। इन एलओयू को आधार बनाकर नीरव मोदी ने नया लोन ले लयि।
- यह फ्रज़ीवाड़ा जनवरी तक चलता रहा और जनवरी में जब इन एलओयू की अवधि पूरी हो गई तो दूसरे बैंकों ने पीएनबी से लोन अदायगी की मांग की।
- जब बैंक ने नीरव मोदी की कंपनी से एलओयू के लयि 100 फीसदी कैश मार्जनि जमा करने के लयि कहा तो कंपनी ने कहा कि उसने पहले भी इस तरह से लोन लयिा है।
- इसके बाद जब बैंक ने आंतरकि जाँच की तो पता चला कि नीरव मोदी की कंपनी को फ्रज़ी एलओयू जारी कयिा गए थे।
- इस वर्ष जनवरी महीने में पहले जारी कयिा गए एलओयू की अवधि खतम हो गई और भारतीय बैंकों की वदिशी शाखाओं को करज़ की रकम वापस नहीं मलिी तो यह घोटाला सामने आया।

वस्तुतः इस सारी धोखाधड़ी से तब परदा हटा जब इस घोटाले में लपित पंजाब नेशनल बैंक के कर्मचारी-अधिकारी रटियर हो गए और नीरव मोदी की कंपनी ने जनवरी में दोबारा इसी तरह की सुवधि शुरू करने की गुज़ारशि की। नए बैंक अधिकारयिों ने वर्षों से चलती आ रही गलती पकड़ ली और घोटाले से परदा हटाने के लयि आंतरकि जाँच शुरू कर दी।

रज़िर्व बैंक ने बनाई समतिि

बैंक अब अपनी प्रणाली और प्रकरयिाओं की जाँच कर रहे हैं ताकि इस तरह के घोटाले की पुनरावृत्ति न हो। रज़िर्व बैंक ने भी सभी बैंकों से जल्द-से-जल्द सथतिि रिपोर्ट देने को कहा है। जैसे-जैसे जाँच आगे बढ़ रही है, नए-नए तथ्य सामने आ रहे हैं। मुखौटा कंपनयिों (Shell Companies) का मुद्दा एक बार फरि सतह पर आ गया है। नीरव मोदी और साझेदार मेहुल चोकसी के ठकानों पर हुई तलाशी में दोनों आरोपयिों की 200 से अधिक मुखौटा कंपनयिों के बारे में दस्तावेज़ जाँच एजेंसयिों के हाथ लगे हैं।

- रज़िर्व बैंक ने पीएनबी घोटाले के परपिरेकष्य में बैंकों में बढ़ रहे फ्रज़ीवाड़ों के कारणों की जाँच और उनके रोकथाम के उपाय सुझाने के लयि आरबीआई के केंद्रीय नदिशक मंडल के पूर्व सदस्य वाई.एच. मालेगाम की अध्यक्षता में 5-सदस्यीय समतिि का गठन कयिा है।
- इस समतिि का काम यह जाँच करना होगा कि बैंकों द्वारा परसिंपत्तयिों के वर्गीकरण और प्रावधान में आरबीआई के आकलन की तुलना में भारी अंतर कयों होता है और इसे समाप्त करने के लयि कनि उपायों की ज़रूरत है?
- समतिि इस बात की भी जाँच करेगी कि बैंकों में फ्रज़ीवाड़े के मामले कयों बढ़ रहे हैं तथा आईटी के इस्तेमाल सथतिि इसके लयि और कय्या उपाय कयिा जा सकते हैं?
- समतिि बैंकों में होने वाले वभिनिन ऑडिटों की भूमकिा और उसके प्रभाव की भी जाँच करेगी।

नए नरिदेश भी जारी कयि

एनपीए वर्षों से भारतीय बैंकिंग सेक्टर के लयि चतिा का कारण बना हुआ है और इससे नपिटने के उपायों पर भारतीय रज़िर्व बैंक तथा केंद्र सरकार लगातार प्रयास करते रहे हैं, लेकिन कोई ठोस समाधान अभी तक नहीं निकला है और यह कम होने के बजाय लगातार बढ़ता ही जा रहा है।

- रज़िर्व बैंक ने एनपीए की समस्या से नपिटने के लयि सार्वजनकि कषेत्त्र के बैंकों हेतु नए नयिम जारी कयिे हैं।

- बैंकों को इसी 1 मार्च से 2 हजार करोड़ रुपए से ऊपर के हर स्ट्रेस्ड लोन (जिसकी वसूली में संदेह है) का मामला 180 दिन के भीतर सुलझा लेना होगा।
- इस दौरान उन्हें कर्रज वसूली की एक योजना पेश करनी होगी और ऐसा नहीं हो सका तो संबंधित खाते को दवालयिा अदालत में भेज दिया जाएगा।
- इसके साथ ही 5 करोड़ रुपए से ज़्यादा कर्रज वाले गैर-अदायगी खातों की जानकारी प्रत्येक सप्ताह देना अनविर्य कर दिया गया है। जो बैंक इस दशिया-नरिदेश का पालन करने में नाकाम साबति होंगे, उन पर जुर्माना लगाया जाएगा।
- सबसे बड़ी बात यह है कि अभी तक जारी घालमेल के लयि जिमिेदार सीडीआर, एसडीआर और एस4ए जैसे उपायों को खतम कर दिया गया है।
- इसके अलावा, मई 2015 में रज़िरव बैंक ने बैंकों में बढ़ रहे फरज़ीवाड़े पर नगिरानी रखने के लयि एक केंद्रीय फ़ॉर्ड रजसि्टरी की स्थापना की थी।
- इस फ़रज़ीवाड़े में चेकों में गड़बड़ी, जाली कर्रज, डेबटि/क्रेडिट कार्ड से लेकर साइबर फ़ॉर्ड तक शामिल हैं।
- रज़िरव बैंक हर साल फ़रज़ीवाड़े के केवल 30 प्रतशित मामलों को ही नपिटा पाता है।

देश में नगिरानी को बेहतर करने के लयि सभी बैंकों को समय-समय पर रज़िरव बैंक द्वारा वविकपूरण नगिरानी से संबंधति एडवाइज़री जारी की जाती रही है, जिसमें बैंकों के काम करने से संबंधति संभावति रसिक मैनेजमेंट भी शामिल है।

(टीम दृषटि इनपुट)

क्या नजिीकरण से दूर हो सकती है खामी?

देश के बैंकिंग तंत्र में सरकारी बैंकों की हसिसेदारी 70 प्रतशित से अधिक है और ऐसे में इससे जुड़ी अधिकांश समस्याओं का ताल्लुक भी इन्हीं से होता है। समस्याओं में इनकी हसिसेदारी असंगत रूप से अधिक है। समस्याएँ नजिी और वदिशी बैंकों की भी हैं, लेकिन उनका आकार बहुत छोटा होता है। वे अपना कारोबार चलाने के लयि सार्वजनकि संसाधनों पर नरिभर नहीं रहते। तब भी स्थति थिह है कि सार्वजनकि कषेत्र के सभी 21 बैंकों का कुल बाजार पूंजीकरण नजिी कषेत्र के एक अकेले बैंक एचडीएफसी से भी कम है। ऐसे में प्रधानमंत्री के उस कथन पर वचिार करना चाहयि, जिसमें उनहोंने कहा था कि कारोबार करना सरकार का काम नहीं है। इसके अलावा आम खाताधारक सार्वजनकि कषेत्र के बैंकों और नजिी कषेत्र के बैंकों की कार्यपद्धति के अंतर से भी परिचति हैं।

नषिकरष: डजिटिल इंडयिा के इस दौर में हर काम कंप्यूटर से होने लगा है। बैंकों के बही-खाते भी हाथ से नहीं लिखे जाते कि कोई भी आसानी से उनमें हेर-फेर कर सके और उन्हें लंबे समय तक पकड़ा ही न जा सके। बैंक का कामकाज खतम होने के बाद हर लेन-देन का प्रतदिनि हसिाब-कतिाब कथिा जाता है और रज़िरव बैंक हर बैंक के बही-खातों की ऑडिटिंग करता है। कंप्यूटर और सेंटरलाइज्ड सर्वर के दौर में ऐसी चूक अनजाने में नहीं हो सकती। ऐसे में इसकी जिमिेदारी तय करने के लयि बारीकी से जाँच की जानी चाहयि। यह मामला बताता है कि हमारी बैंकिंग व्यवस्था में सबकुछ चाक-चौबंद नहीं है।

बैंकों में ऐसे घोटाले होने के पीछे ऋण देने के मानकों की अनदेखी करना सबसे बड़ा कारण है। इस घोटाले में सबसे बड़ी वडिंबना यह है कि बैंक के ऑडिट में कुछ गलत नहीं पाया गया और बैंकों की आंतरकि नगिरानी प्रणाली को भी इतने बड़े घोटाले की भनक तक नहीं लगी। अमेरिका और पश्चिमी देशों में वतितीय गड़बड़यिों के लयि कड़ी सज़ा का प्रावधान है, साथ ही दोषयिों को सज़ा जल्द सुना दी जाती है। लेकिन हमारे देश में वतितीय फ़ॉर्ड कर लोग देश छोड़ कर बेरोकटोक चले जाते हैं। जो बात सबसे ज़्यादा हैरान करती है, वह यह कि एक ही बैंक शाखा से इतनी बड़ी रकम की हेरा-फेरी हो जाना। यह घोटाला ऐसे वक्त सामने आया है जब सरकारी बैंकों पर एनपीए का बोझ रकिारड स्तर तक पहुँच चुका है।

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/banking-fraud>